Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 4.94
ISSN No. 2456-1665

हिंदी साहित्य में नारी परिवर्तन

डॉ. सोनल रा. नंदनुरवाले
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
सरस्वती भुवन विज्ञान महाविद्यालय, औरंगाबाद

भारतीय पुरूष प्रधान समाज में प्राचीन काल से नारी शोषण की समस्या उभरती आती दिखाई देती है । साहित्य और नारी का अटूट बन्धन है । किसी भी भाषा का साहित्य हो उसमें नारी को केंद्र बनाया जाता है । समकालीन उपन्यासकारों ने नारी संघर्ष के विविध रूपों को लेकर अपनी कलम चलाई है । पुरूष की अपेक्षा स्त्री को अज्ञानता के अंधकार में बहुत कालों तक रखा गया । उस अपने अस्तित्व का एहसास दिलाने के लिए साहित्य ही अग्रभागी है, जो उसके स्तर को उँचा उठा सका ।

लेखिका सूर्यबाला का कथन है ''पिछले पाँच दशकों में निस्सित नारी का सूक्ष्मता से आकलन करें तो, पहले साहित्य की नारी आगे बढ़ी, ज्यादा बोल्ड हुई, पीछे समाज की कुछ कृतियों को मद्देनजर रखते हुए तो कभी-कभी ऐसी भी स्थिति लगी की साहित्य समाज का नहीं, वरन समाज साहित्य का दर्पण बन सामने आया ।''

सन् १९४२ में फ्रेंच समीक्षक सीमोन द बोऊवा की 'द सेकंड सेक्स' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई जिसके द्वारा सीमोन ने नारी मुक्ति का आहवान किया । सीमोन नारी के 'अन्य' एवं 'अधीनस्थता. की स्थिति को चुनौती देती है । यह कहती है ''फ्रान्स की राज्यक्रान्ति हो या विश्व युद्ध, स्त्री से पुरूष सहारा लेता है और पुन: उसे घर लौट जाने को कहता है । इसलिए स्त्री को अमीर हो या गरीब, श्वेत हो या काली अपनी लड़ाई खुद लड़नी होगी ।'' सीमोन के इन क्रांतिकारी विचारों में दुनिया के सभी देशों की नारियाँ प्रभावित हुई एवं उन्होंने अपनी लड़ाई खुद ही लड़कर अपनी मुक्ति के द्वार खोल दिए है । इस पुस्तक द्वारा पहली बार आधुनिक नारीवाद के बुनियादी प्रश्न स्पष्ट एवं सही रूप में प्रस्तुत हुए ।

सारे विश्व की स्त्रियों की नियति के प्रति गहरा आक्रोश व्यक्त करते हुए सीमोन विश्व की प्रत्येक संस्कृति में पाती है कि स्थिति या तो स्त्री को देवी के रूप में रखा गया या गुलाम की स्थिति में । अपनी इन स्थितियों को स्त्री ने सहर्ष स्वीकार किया, बल्कि बहुत सही जगहों पर वह सह अपराधिनी भी रही ।

आजादी के पचास वर्षों के बाद भी औरत किसी न किसी प्रकार आश्रिता के रूप में हमारे सामने आती है । भले ही वह आर्थिक रूप में स्वतंत्र हो । आज भी उसमें उतना साहस नहीं आया की वह स्वतंत्र रूप से जी सके । वह एक स्थान से स्वतंत्र होती दिखाई देती है तो दूसरे स्थान पर बंदी बन जाती है ।

समकालीन साहित्य समाज की गतिविधियों से अछूता न रहा । हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं का साहित्य भी वर्तमान सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों की उपज है । रचनाकार परिस्थितियों को केंद्र में रखकर अपने विचारों को अभिव्यक्त करता रहता है। स्त्री संबंधी विचारधारा से हिंदी एवं अन्य भाषाओं की लेखिकाएँ भी प्रभावित हुई है। हिंदी की कथा-लेखिकाओं में मालती जोशी, शिवाजी, कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, मन्नू भंडारी, शशिप्रभा शास्त्री, मेहरून्निसा परवेज, ममता कालिया, कृष्णा अग्निहोत्री, मृदुला गर्ग, मंजुला भगत, निरूपमा सेवती, कुसुम बंसल, दिप्ती खंडेलवाल, सूर्यबाला, शुभा वर्मा, नासिरा शर्मा, प्रभा खेतान आदि की रचनाओं में नारी पात्र स्वतंत्र अधिकारों के लिए संघर्षशील दिखाई देते हैं ।

इन महिला उपन्यासकारों ने स्वातंत्र्योत्तर काल की नारी की सामाजिक, मानसिक स्थिति को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है । जीवन के बदलते हुए संदर्भ, टूटते हुए परिवेश, दाम्पत्य में पड़ी हुई दरार, मानवी मूल्यों का बिखराव, विवाह तथा यौन संबंधों की समस्याएँ इन स्थितियों में स्त्री स्वयं की संभाल पायी या नहीं, स्त्री की इन मानसिकता को लेकर स्त्री के बहुआयामी व्यक्तित्त्व की सही पहचान अपनी कृतियों में इन महिला उपन्यासकारों ने बिना

किसी हिचक के तटस्थता से की है । जो आज की नारी की मन:स्थिति का सच्चा दस्तावेज है।

इन हिंदी उपन्यास लेखिकाओं के संघर्षरत नारी पात्र इस प्रकार है- यामिनी, यामिनी, कथा - सूर्यबाला, मित्रा-मित्रो मरजानी - कृष्णा सोबती, शकुन - आपका बंटी - मन्नू भंडारी, शाल्मली - शाल्मली - नासिरा शर्मा, सुषमा- पचपन खंबे लाल दिवारें - उषा प्रियंवदा, अनारो - अनारो - मंजुल भगत, मानु - मेरे संधि पत्र - सूर्यबाला, सुजाता- समाधान - रूचा शुक्ल, राधिका - रूकोगी नहीं राधिका - उषा प्रियंवदा, प्रिया- प्रिया- दिप्ति खंडेलवाल, मनिषा - उसके हिस्से की धूप - मृदुला गर्ग, सुनीता - पतझड़ की आवाजें - निरूपमा सेवती, वसुधा - तत्सम - राजी सेठ आदि ।

प्रसिद्ध लेखिका अमृता प्रीतम ने कहा ‘‘कड़ी धूप का सफर’ इस पुस्तक में भारत के सभी क्षेत्रों में कार्यरत नारियों का साक्षात्कार किया है । इन साक्षात्कार में यह पाया गया की, नारी आर्थिक रूप से स्वतंत्र तो हुई है, पर वैयक्तिक जीवन में वह पूर्णत: स्वतंत्र नहीं हो पायी । इसी प्रकार तसलीमा, श्रीमती महाश्वेता देवी तथा अन्य अहिंदी हिंदी भाषी लेखिकाओं ने अपनी भाषाओं के साहित्य में स्त्री से संबंधित कई प्रश्न उठाये हैं ।

इन पचास वर्षों में नारी में जो परिवर्तन आया वह प्रभा खेतान का उपन्यास ‘छिन्नमस्ता’ की प्रिया में देखा जा सकता है । छिन्नमस्ता की प्रिया एक उपेक्षित डरपोक लड़की से सुप्रतिष्ठित व्यापारी और करोड़ों में खेलने वाली बन जाती है । अपने पति से तलाक, बच्चे से भी अलगाव और अपनी निजी पहचान की आकांक्षा किसी पुरूष, किसी पती की छाया से दूर । अत: इन नारी पात्रों में अहंकार, स्वाभिमान, अधिकार निर्णय लेने की क्षमता पायी जाती है ।

समस्त महिला उपन्यासकारों के नारी पात्रों की मानसिकता में परिवर्तन निश्चित आ गया है । वे आर्थिक स्वतंत्रता की समर्थक एवं आर्थिक स्वतंत्रता के लिए संघर्षशील है । विवाह,

यौन-संबंध, प्रेम-विवाह, विवाह विच्छेद जैसी समस्याओं में भी साहस से कदम आगे बढ़ाने में भी वह सक्षम है । इस परिवर्तन में साहित्य का महत्त्वपूर्ण योगदान है ।

संदर्भ

१) डॉ. शोभा बेरेकर - हिंदी उपन्यास : नारी विमर्श

२) डॉ. राजकुमारी गडकर - स्त्री सशक्तीकरण और भारतीय साहित्य

३) डॉ. आराधना मिश्रा - स्त्री विमर्श विविध संदर्भ

४) डॉ. कल्पना वर्मा - स्त्री विमर्श विविध पहलू